ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 15 अंक 13 कुल पृष्ठ-8 5 से 11 मार्च, 2020 दयानन्दाब्द 194 सृष्टि सम्वत् 1960853120 सम्वत् 2076 फा. शु.-12

आर्य समाज के महान नेता, त्यागी-तपस्वी संन्यासी, युवाओं के प्रेरणा स्रोत स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज के 83 वें जन्मदिवस के अवसर पर

13 वाँ बेटी बचाओ चतुर्वेद पारायण महायज्ञ

स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ, टिटौली, जिला-रोहतक हरियाणा में विधिवत रूप से हुआ प्रारम्भ

वेद व्याकरण एवं दर्शनों के आचार्य मूर्धन्य संन्यासी पूज्य स्वामी चन्द्रवेश जी महाराज के ब्रह्मत्व एवं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी की अध्यक्षता में 3 से 15 मार्च, 2020 तक चलने वाले चतुर्वेद पारायण महायज्ञ का उद्घाटन सार्वदेशिक सभा के मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य ने किया

प्रथम दिन आहुति देने वालों में मुख्य यजमान के रूप में श्री अजयपाल आर्य एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती प्रीति आर्या स्वामी इन्द्रवेश जी की बहन श्रीमती मूर्ति देवी आर्या व उनकी सुपुत्री श्रीमती सुनीता खासा, श्री विनोद कुमार हुड्डा व उनकी धर्मपत्नी श्रीमती अनीता हुड्डा सुशोभित हुए

सैकड़ों याज्ञिक परिवारों ने यज्ञ में सम्मिलित होकर अपनी आहुतियाँ प्रदान की तथा गोहत्या, कन्या भ्रूण हत्या, नशाखोरी, अश्लीलता एवं धार्मिक अन्धविश्वास के विरुद्ध प्रारम्भ किये गये महाअभियान में अपना सक्रिय सहयोग करने का संकल्प लिया

इस महायज्ञ का संयोजन बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय संयोजक बहन प्रवेश आर्या कर रही हैं

तथा व्यवस्था का दायित्व बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्ष बहन पूनम आर्या ने संभाला हुआ है

सोशल मीडिया एवं यू-ट्यूब चैनल 'मिशन आर्यावर्त' के निदेशक ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य अपनी टीम के साथ प्रचार-प्रसार के कार्य को कुशलता के साथ चला रहे हैं

आर्य समाज के महान नेता, त्यागी–तपस्वी संन्यासी, युवाओं के प्रेरणा स्रोत स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज के 83वें जन्मदिवस के अवसर पर 13वाँ बेटी बचाओ चतुर्वेद पारायण महायज्ञ 3 से 15 मार्च, 2020 तक स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ, टिटौली, जिला–रोहतक हरियाणा में विधिवत रूप से प्रारम्भ हुआ। वेद व्याकरण एवं दर्शन शास्त्र के आचार्य मूर्धन्य संन्यासी पूज्य स्वामी चन्द्रवेश जी महाराज के ब्रह्मत्व एवं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पूज्य स्वामी आर्यवेश जी की अध्यक्षता में उद्घाटन समारोह हर्षोल्लास के साथ प्रारम्भ हुआ।

इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य जी ने अपने उद्बोधन में आर्य समाज के कार्यों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि रचनात्मक कार्य और सामाजिक सेवा के कार्य संगठन के लिए दोनों आवश्यक हैं। यदि एक कार्य छूट जाता है तो फिर दूसरा कार्य भी प्रभावहीन हो जाता है। इसलिए यह आवश्यक है कि आर्य समाज की संस्थाएँ रचनात्मक कार्य को पूरी निष्ठा से करें और संगठन की ओर से सामाजिक मुद्दों पर आन्दोलन व प्रचार–प्रसार भी उतने ही प्रभावशाली तरीके से चलाये जायें। उन्होंने आर्य समाज की वर्तमान परिस्थितियों में और अधिक आवश्यकता अनुभव करते हुए कहा कि सामाजिक ताने–बाने को सुरक्षित रखने तथा राष्ट्र को साम्प्रदायिक एवं जातिगत विवादों से बचाने के लिए आवश्यक है कि आर्य समाज और अधिक सक्रिय होकर सामाजिक सौहार्द एवं सहअस्तित्व की भावना पैदा करने के लिए विशेष अभियान चलाये। उन्होंने आर्य समाज के सिद्धान्तों को सर्वाधिक विज्ञान सम्मत एवं व्यवहारिक बताया। उन्होंने कहा कि आर्य समाज के समकालीन संगठन ब्रह्म समाज, प्रार्थना समाज व थियोसोफिकल सोसाईटी आदि की अब कहीं कोई चर्चा नहीं है जबकि आर्य समाज वर्तमान में देश के अन्य संगठनों से अधिक प्रभावी एवं मान्यता प्राप्त है। आज भी लोग आर्य समाज की ओर आशा की दृष्टि से देखते हैं। अतः हम सभी आर्यों को इस दिशा में सक्रिय होकर कार्य करना चाहिए। प्रो. विट्ठलराव आर्य जी ने पूज्य स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज को स्मरण करते हुए कहा कि उनके व्यक्तित्व से मैं 9वीं क्लास में पढ़ते समय हैदराबाद आर्य महासम्मेलन में इतना प्रभावित हुआ कि उनके आह्वान पर मैंने भी बाद में अपना सम्पूर्ण जीवन आर्य समाज के कार्यों को समर्पित करने का निश्चय किया और 1968 से ही मैं आर्य समाज के कार्य में सक्रिय हो गया। स्वामी इन्द्रवेश जी और स्वामी अग्निवेश जी ने आर्य समाज में एक नया अध्याय जोड़कर ऐतिहासिक कार्य किया और आर्य समाज के सामाजिक पक्ष को अर्थात् आन्दोलनात्मक पक्ष को बड़ी तेजस्विता के साथ आगे बढ़ाया। 1973 का किसान आन्दोलन, 1975 का जन–आन्दोलन, 1987 का सतीप्रथा विरोधी आन्दोलन, 1992 का शराबबन्दी आन्दोलन और 2005 में बेटी बचाओ आन्दोलन ऐसे ऐतिहासिक आन्दोलन हैं जिन्होंने देश और समाज की ज्वलन्त समस्याओं पर न केवल जबरदस्त चोट की बल्कि सफलता भी प्राप्त करके दिखाई। 1973 में स्वामी इन्द्रवेश जी ने दिल्ली की वोट क्लब पर किसानों को गेंहूँ का लाभकारी मूल्य दिलाने के लिए 18 दिन की भूख हड़ताल करके केन्द्र सरकार को 76 रुपये से 105 रुपये प्रति क्विंटल गेंहूँ का भाव दिलवाने में सफलता प्राप्त की। स्वामी अग्निवेश जी ने सतीप्रथा के खिलाफ दिल्ली से देवराला तक पदयात्रा करके 1987 में केन्द्र सरकार को सती प्रथा के विरुद्ध सख्त कानून बनाने के लिए बाध्य किया तथा सफलता हासिल की। शराबबन्दी आन्दोलन के परिणामस्वरूप सन् 1996 में हरियाणा में पूर्ण शराबबन्दी लागू करवाकर स्वतन्त्र भारत में एक नया रिकॉर्ड बनाने में स्वामी इन्द्रवेश जी ने सफलता हासिल की और इसी प्रकार 2005 में बेटी बचाओ अभियान प्रारम्भ करके कन्या भ्रूण हत्या के विरुद्ध पूरे देश की आत्मा को जगाकर एक नया इतिहास रचा। आज उस अभियान को सभी प्रदेशों एवं केन्द्र की सरकार ने राष्ट्रीय अभियान के रूप में चलाया हुआ है। स्वामी इन्द्रवेश जी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए सभा मंत्री जी ने यज्ञ के आयोजन के लिए बहन प्रवेश आर्या, पूनम आर्या और ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य जी को विशेष रूप से धन्यवाद दिया। इस अवसर पर सभामंत्री जी को स्वामी इन्द्रवेश जी का चित्र भेंटकर ग्रामवासियों की ओर से सम्मानित किया गया।

उद्घाटन अवसर पर हुए विशेष यज्ञ में आहुति देने वालों में मुख्य यजमान के रूप में श्री अजयपाल आर्य एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती प्रीति आर्या स्वामी इन्द्रवेश जी की बहन श्रीमती मूर्ति देवी आर्या व उनकी सुपुत्री श्रीमती सुनीता खासा, श्री विनोद कुमार हुड्डा व उनकी धर्मपत्नी श्रीमती अनीता हुड्डा, डॉ. विवेकानन्द शास्त्री व उनके अध्यापक साथियों की टीम श्रीमती जानकी देवी (बिजनौर), श्री राजवीर वशिष्ठ, श्री रामपफल कुण्डू, श्री राम कुमार आर्य, श्री जिले सिंह आर्य, श्री जिले सिंह कुण्डू, श्री कृष्ण कुमार प्रजापति, श्री नरेश शर्मा, डॉ. नारायण सिंह आर्य, वैदिक विद्वान श्री दयानन्द शास्त्री, श्री धर्मेन्द्र कुमार (छपरौली) आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

8 मार्च महिला दिवस पर विशेष

''नारी-वैदिक युग को पुनः लौटा दो''

— अरुणा सतीजा

नारी ईश्वर की अद्भुत कृति है सृष्टि की उत्पत्ति के साथ ही नारी का सृजन हुआ, नारी से ही सम्पूर्ण संसार का निर्माण हुआ इसीलिये वेद में इसे ''पृथ्वी'' कहा गया है। मानव जीवन का आरम्भ ही नारी की गोद से हुआ है। इसीलिये सही कहा है वह अपने कर्त्तव्य की गुरुता के भार को सहर्ष वहन करती हुई मानव को संसार चक्र चलाने के लिये सक्षम बनाती है। वह ममता की मूर्ति है जो आकाश की तरह सबको अपने में लपेटे हुए है। वह अग्नि है शौर्य है, साक्षात् मृत्यु है जो कभी दुर्गा तो कभी झांसी की रानी के रूप में प्रकट होती रही हैं। वह प्रेरणा है जो मुर्दो में जान डाल देती है इसीलिये यह प्रसिद्ध है कि प्रत्येक पुरुष की सफलता के पीछे नारी है। वह पूजनीय है वन्दनीय है जिसे देवता भी नमस्कार करते है जैसे मनु महाराज ने लिखा है–

''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवताः।
''यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वारतन्मा फलः क्रियाः।

वहीं वह अबला है महान कवि को लिखना पड़ा–

''हाय नारी तेरी यही कहानी,
आंचल में दूध, आंखों में पानी''।

तुलसीदास जी जैसे महान् कवि ने उसे शूद्र सम बताया जबकि इतिहास में इसे मात्र विलासिता व भोग की सामग्री। वह परमात्मा की रहस्यमयी कृति है एक उलझी पहेली है। आओं इसके बारे में चिन्तन व मनन करें। इतिहास के पन्नों के आधार पर शोध करें शायद इस पहेली को सुलझा सके–

नारी का हर युग में अपना इतिहास रहा है। हर काल में सामाजिक व राजनैतिक हल चल का सब से अधिक प्रभाव नारी पर पड़ा।

वैदिक काल – वैदिक काल मानव जाति का स्वर्णकाल था। इस काल में नारी को भी समाज से सर्वोच्च स्थान प्राप्त था। सभी क्षेत्रों में उसे समान अधिकार प्राप्त थे। वह ''गृहस्थ यज्ञ'' की ब्रह्मा होती थी। ब्रह्मा की तरह सारे गृह कार्य को प्रकाशित करती थी। वह पुरुष की अर्धांगिनी थी कोई भी शुभ व महान् अनुष्ठान उसके बिना पूर्ण नहीं होता था। वह देवी की मूर्ति, लज्जा व शालीनता की प्रतीक थी। गृहस्थ को स्वर्ग बनाना ही उनका मुख्य लक्ष्य था इसीलिये वह गृहस्थ लक्ष्मी मानी जाती थी। सभी क्षेत्रों में वह पूर्ण स्वतंत्र थी। विदूषी एवं गृह कार्यों में चतुर थी। घर में बड़ो की सेवा सुश्रवा व सम्मान छोटो को ममता से परिपूर्ण करने वाली होती थी। पति उसके लिये पूजनीय होता था। पति उसके साथ सम्मान पूर्वक व्यवहार करता था। गृहस्थ सुखी व धर्मानुकूल होते थे इसका सारा श्रेय नारी को जाता है क्योंकि गुरु पत्नियां कन्याओं को ''वेदानुकूल शिक्षा'' देकर उन्हें सुघड़ गृहणियों के रूप में तैयार करती थी।

नारी ही समस्त समाज की ''मेरूदण्ड'' थी। उत्तम योग्य व सुसंस्कारित सन्तान मातृत्व रूपी वृक्ष की अमृतमय गोद में पल कर बनती थी।

माता निर्माता भवति एवं नास्ति मातृ समोगुण।

बच्चों के प्रथम पाठशाला मां की गोद है। मात्र पांच वर्षों में सच्चे मानव तैयार कर देती है। माता द्वारा दिये संस्कारों का प्रयोगात्मक स्वरूप महारानी मदालसा से मिलता है। जिसने अपने प्रथम तीन पुत्रों को संस्कार दे कर संन्यासी बनाया और चौथे पुत्र को राजा के अनुरोध पर क्षत्रिय धर्म की शिक्षा दे कर देश व राजा के उत्तराधिकारी के रूप में योग्यतम शासक दिया। धन्य थी ऐसी वीर माताएँ। समय व परिस्थितियां बदली राजनैतिक परिवर्तन हुआ नारी के जीवन पर भी इसका प्रभाव पड़ा। रामायण काल में नारी की स्थिति इतनी शोचनीय नहीं थी। जैसी की तुलसी दास जी ने वर्णन किया है–

ढोर गंवार और नारी, तीनों ताड़न के अधिकारी।

शायद इसी काल से नारी का पतन प्रारम्भ होने लगा था। उन्होंने अपने महाकाव्य में महारानी कैकेई की युद्ध कुशलता, उर्मिला व सीता के त्याग, माता कौशल्या, ऋषि पत्नि अनुसुइया, श्रद्धालु भीलनी, जैसी कर्त्तव्य परायण नारियों का आदर्श प्रस्तुत किया है।

राजपूतों का उदय हुआ। उन में बहु विवाह, कन्यावध, सती प्रथा, जैसी क्रूर प्रथाएं प्रचलित थी। राजपूतों को आपसी फूट एवं जातिय ऊँच–नीच के कारण मुसलमानों विशेषकर मुगलों को भारत पर शासन करने का मौका मिला। यहीं से शुरू होती है नारी की करूणामयी कहानी। इन आक्रमणकारियों का मुख्य उद्देश्य था भारत की अतुल सम्पत्ति को लूटना व इस्लाम धर्म को विश्व धर्म बनाना। उन दिनों भारत में मूर्ति पूजा का प्रचलन चरम सीमा पर था।

भारत का अधिकांश धन मन्दिरों में जमा था, दूसरा देश की रक्षा का भार भी मूर्तियों के रूप में भगवान् पर छोड़ रखा था। बलपूर्वक धर्म परिवर्तन किया जाता था। इस्लाम को स्वीकार करो या मरो लाखों लोग निर्दयतापूर्ण मौत के घाट उतार दिये गये।

मुसलमानों के बाद यूरोप की सब से बड़ी शक्ति अंग्रेज आये। उन्होंने हिन्दू तथा मुसलमानों को लड़ाया और भारत पर शासन करने लगे। यही काल नारी का पतन काल था। उपरोक्त बुराइयां समाज में व्याप्त होने के कारण नारी जीवन अभिशाप बन गया था। घूंघट की आड़ में छिपी नारी पुरुष के लिये मात्र विलासित व भोग की वस्तु बन गई। यहीं से नारी हिंसा का प्रारम्भ हुआ। वैदिक युग की गृह लक्ष्मी कोठो की शोभा बनने लगी।

नारी जीवन की इन विषम परिस्थितियों में **नारी का मसीहा बन कर आया देव दयानन्द** जिसका हृदय नारी कृन्दन से चीत्कार कर उठा। कई बार यह तेजस्वी वीर रातों भर रोता रहा। वेदों का हवाला देते हुए उन्होंने रूढ़िवादी समाज को ललकारा और कहा नारी और परूष को समान रूप से शिक्षा प्राप्त करने व वेद पढ़ने का अधिकार है। नारी को भी आर्थिक सामाजिक, राजनैतिक एवं धार्मिक सभी क्षेत्रों में स्वतंत्रता है। परिणाम स्वरूप नारी से सम्बन्धित अनेकों सुधार हुए। सतीप्रथा कानूनन बंद हो गई, शारदा एक्ट पास कर बाल विवाह खत्म हो गये। पर्दा प्रथा भी बंद हो गई। नारी शिक्षा के लिये स्कूल, कॉलेज, व गुरुकुल खुलवाये गये। देश की स्वतंत्रता के साथ नारी स्वतंत्रता का युग भी प्रारम्भ हो गया।

अब नारी के सशक्तिकरण का दौर शुरू हुआ जिसका अभिप्रायः है सामाजिक राजनैतिक आर्थिक सभी क्षेत्रों में हस्तक्षेप की क्षमता। आज लड़कियां लड़कों की अपेक्षा अधिक मेधावी एवं परिश्रमी है आज नारी प्रधानमंत्री (श्रीमती गांधी), मुख्यमंत्री (श्रीमती वसुन्धरा जी), विधानसभा अध्यक्ष (श्रीमती सुमित्रा सिंह जी), राज्यपाल (श्रीमती प्रतिभा पाटिल जी) आकाश को छूने वाली मिस चावला जिस पर भारत को ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण विश्व को नाज है। इस सुन्दर प्रपेक्ष में पर्दे के पीछे पाश्चात्य सभ्यता के अति प्रभाव ने भारतीय सभ्यता व संस्कृति को धूमिल करना प्रारम्भ कर दिया। विज्ञान की अभूतपूर्व उन्नति ने भौतिक युग को जन्म दिया, धन की आवश्यकता बढ़ी, नारी शिक्षा का मात्र उद्देश्य धन कमाना व विलासिता का जीवन व्यतीत करना बन गया। भारतीय सभ्यता व संस्कृति के चिन्ह तो कुछ गिनती के परिवारों में दिखाई देते हैं। अश्लील चलचित्रों, बाजार में बिकने वाली वस्तुओं पर गन्दे व अर्धनग्न विज्ञापन आदि ने वर्तमान वातावरण को अश्लीलता की चरम सीमा पर पहुँचा दिया है। आज मानव मानव नहीं राक्षस बन गया है। नारी का जीवन कही भी सुरक्षित नहीं है। अब वह मात्र भोग की वस्तु बनती जा रही है। एक ऐसे संसार का निर्माण होता जा रहा है जहां भौतिक सुख के अतिरिक्त और कुछ नहीं। "eat drink and be merry" निठारी काण्ड ने तो अध्यात्मिकता के भवन को धाराशायी कर दिया है इतना घिनौना कृत्य कि कुकर्म करने के लिये मासूम बच्चों बच्चियों का अपहरण करना, मारना व मरी बच्चियों से कुकर्म करना इतनी दुर्दशा नारी की शायद ही किसीयुग में की गई हो। हमारा सारा समाज मूक दर्शक हो कर देख रहा है जैसे कुछ हुआ ही नहीं। आज मैं अपने अध्यात्मिक गुरुओं, समाज के ठेकेदारों, राज्य के अध्यक्षों, लेखकों, कवियों आदि से पूछना चाहती हूँ क्या वास्तव में आज हमारी आत्मा मर चुकी है, उनकी कलम की स्याही खत्म हो गई है। बालिकाओं के रूप में नारी की तड़पन उन्हें तड़पाती नहीं हैं। शायद नारी स्वयं ही बहुत कुछ इस दशा के लिये उत्तरदायी हैं। खुले आम चुम्बन, कम से कम वस्त्रों का प्रयोग, कुआंरी मां बनना, दो दो पतियों की उपस्थिति में तीसरे के गले में वर माला डालना, मां बाप व समाज की इच्छा के विरुद्ध शादी करना, क्या स्वामी जी ने नारी को स्वतंत्रता इसीलिये दिलायी थी, ऐसी स्वतंत्रता, स्वतंत्रता नहीं अराजकता है, दानवता का नंगा नाच है। जो देश समाज, धर्म व जाति के लिये कलंक है। सबको एक जुट हो कर इसे मिटाना होगा। यह सब देख कर मेरी दस पोती का कहना है दादी जी अगर हम सब पिक्चर व टी०वी० देखना बंद कर दें तो यह सब अपने आप खत्म हो जाएगा। कितना स्वाभाविक व सुन्दर तर्क था बच्ची का।

अपने स्वाभिमान, लज्जाशीलता को पाने, अपने अस्तित्व को बचाने व नारी के भारतीय स्वरूप को पुनः पाने के लिये मां व पत्नि के रूप में नारी को अपनी सन्तानों को सुसंस्कारों से सुसज्जित करना होगा। गृहस्थ के वातावरण को आध्यात्मिक बनाना होगा। जब नारी एक बार दृढ़ संकल्प कर लेती है तो फिर उसे भगवान् भी नहीं रोक सकता।

उठो ! भारतीय नारियों जागों! बेटियों को शिक्षा के साथ–साथ गृहस्थ धर्म की भी शिक्षा देना अनिवार्य है। गृहस्थ जीवन धन्य है। इसमें मनुष्य की सब एषणाओं की पूर्ति होती है। जिस परिवार में समरसता होती है वह स्वर्ग बन जाता है। इसलिये वेदों में लिखा है विवाह स्वर्ग का द्वार है इसीलिये यह सबके लिये आवश्यक है। भारतीय गृहस्थ प्रणाली अनूठी व आनन्द दायक है जिस में मानव कमलवत रहता है। अर्थ की अपेक्षा अध्यात्मबल अनिवार्य है। नहीं तो मानव मृग तृष्णा की तरह वित्त तृष्णा में तड़प–तड़प कर जीवन नष्ट कर लेगा। परिवार सुखी तो मानव सुखी जिसका आधार केवल नारी है। बिना डिग्रिया हासिल किये नारियों ने सीता सावित्री गार्गी, इडा, राम, कृष्ण, दयानन्द, विवेकानन्द, गुरुनानक जैसे महापुरुषों को जन्म दिया। जो हजारों वर्षों के बीत जाने पर भी अमर हैं, पूजनीय है मानव जाति के लिये अनुकरणीय है जबकि किसी धनी व्यक्ति को आज तक यह सम्मान प्राप्त नहीं हुआ। क्या आज की पढ़ी लिखी नारी ने कोई ऐसा भगवान् पैदा किया, उत्तर होगा नहीं तो क्यों? इसीलिये महर्षि स्वामी दयानन्द ने मानव जाति को आह्वान् किया था कि नारी वेद पढ़ने का अधिकार दें। वेदों की ओर लौट चलों। वेदों के माध्यम से उस परमपिता परमात्मा के आदेशों व नियमों का पालन करो तभी विश्व के सभी मानव सुख व आनन्द भोग सकेंगें।

ईश्वर प्रदत्त यह वसुन्धरा स्वर्ग का धाम है, मुक्ति प्रदाती है, कल्याणी है, सब वरों की दात्री है। इसकी सखा नारी है जो जगत् जननी है सब की वन्दनीय है। आओ सब मिलकर इसे शत् शत् नमन करते हुए इसके उज्ज्वल भविष्य की कामना करें।

जे-११०, अशोक चौक, आदर्शनगर, जयपुर-४
(राजस्थान)

उठो ! भारतीय नारियों जागों! बेटियों को शिक्षा के साथ-साथ गृहस्थ धर्म की भी शिक्षा देना अनिवार्य है। गृहस्थ जीवन धन्य है। इसमें मनुष्य की सब एषणाओं की पूर्ति होती है। जिस परिवार में समरसता होती है वह स्वर्ग बन जाता है। इसलिये वेदों में लिखा है विवाह स्वर्ग का द्वार है इसीलिये यह सबके लिये आवश्यक है। भारतीय गृहस्थ प्रणाली अनूठी व आनन्द दायक है जिस में मानव कमलवत रहता है। अर्थ की अपेक्षा अध्यात्मबल अनिवार्य है। नहीं तो मानव मृग तृष्णा की तरह वित्त तृष्णा में तड़प-तड़प कर जीवन नष्ट कर लेगा। परिवार सुखी तो मानव सुखी जिसका आधार केवल नारी है। बिना डिग्रिया हासिल किये नारियों ने सीता सावित्री गार्गी, इडा, राम, कृष्ण, दयानन्द, विवेकानन्द, गुरुनानक जैसे महापुरुषों को जन्म दिया। जो हजारों वर्षों के बीत जाने पर भी अमर हैं, पूजनीय है मानव जाति के लिये अनुकरणीय है जबकि किसी धनी व्यक्ति को आज तक यह सम्मान प्राप्त नहीं हुआ। क्या आज की पढ़ी लिखी नारी ने कोई ऐसा भगवान् पैदा किया, उत्तर होगा नहीं, तो क्यों? इसीलिये महर्षि स्वामी दयानन्द ने मानव जाति को आह्वान् किया था कि नारी को वेद पढ़ने का अधिकार दें। वेदों की ओर लौट चलों। वेदों के माध्यम से उस परमपिता परमात्मा के आदेशों व नियमों का पालन करो तभी विश्व के सभी मानव सुख व आनन्द भोग सकेंगें।

चिरस्मरणीय व्यक्तित्व | 83 वें जन्मदिवस पर विशेष | कीर्तिर्यस्य स जीवति

आर्य राष्ट्र के स्वप्नदृष्टा स्वामी इन्द्रवेश जी

- स्वामी आर्यवेश

जन्म—१३ मार्च, १९३७
जन्मस्थान—ग्राम सुण्डाना, जिला-रोहतक
माता-पिता— श्रीमती पतोरी देवी, श्री प्रभुदयाल जी

प्रारम्भिक शिक्षा : गांव के स्कूल से मिडल तक पढ़ने के बाद आप विरक्तभाव से घर छोड़कर गुरुकुल झज्जर आये। कुछ समय यहां पढ़ाई प्रारम्भ करने के पश्चात् आपने छह महीने तक गांव बेरी (झज्जर) के एक मन्दिर में आचार्य बलदेव जी के साथ पं० राजवीर शास्त्री से संस्कृत का अध्ययन किया। आचार्य बलदेव जी भी तभी घर छोड़कर आये थे। बाद में उत्तर प्रदेश के नौनेर, सिरसागंज आदि गुरुकुलों में अध्ययन किया तथा संस्कृत महाविद्यालय यमुनानगर में स्वामी आत्मानन्द जी के सान्निध्य में शेष पढ़ाई पूरी की। व्याकरणाचार्य, आयुर्वेदाचार्य एवं दर्शनाचार्य स्तर की पढ़ाई पूरी की। तत्पश्चात आपने स्वामी ओमानन्द जी महाराज (पूर्व आचार्य भगवानदेव) के सान्निध्य में गुरुकुल झज्जर के प्रधानाचार्य का कार्यभार सम्भाला। स्वामी ओमानन्द जी के अति प्रिय शिष्यों में आप भी एक थे इसीलिये आपको उन्होंने गुरुकुल का पूरा कार्यभार सम्भलवा दिया था। अष्टाध्यायी, महाभाष्य, दर्शन आदि के आप मर्मज्ञ थे। व्यायाम में आपकी विशेष रुचि थी। उस समय आपका नाम ब्र० इन्द्रदेव मेधार्थी था।

सामाजिक जीवन की शुरुआत :—

सन् १९६६ में स्वामी अग्निवेश (पूर्व नाम प्रो० श्यामराव) कलकत्ता से गुरुकुल झज्जर आकर स्वामी इन्द्रवेश (पूर्व नाम ब्र० इन्द्रदेव मेधार्थी) से मिले तथा दोनों ने सामाजिक जीवन में उतरने का निर्णय किया। उनका यह आत्मीय सम्बन्ध अंतिम क्षणों तक अटूट रहा। दोनों ही नेताओं ने एक दूसरे का पूरक बनकर अपने सामाजिक दायित्व को निभाया। १९६७ में सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के नाम से युवकों का संगठन बनाकर कार्य प्रारम्भ किया। उनके साथ उसी समय स्वामी आदित्यवेश (पूर्व नाम आचार्य रामानन्द), स्वामी शक्तिवेश (पूर्व नाम डा० कृष्णदत्त), ब्र० कर्मपाल जी, प्रो० उमेदसिंह, प्रो० बलजीतसिंह आर्य, मा० धर्मपाल आर्य, ओमप्रकाश पत्रकार, स्वामी विवेकानन्द, स्वामी योगानन्द, मनुदेव आर्य, राजसिंह आर्य आदि अनेक युवक कार्यक्षेत्र में उतरे तथा आर्यजगत् में युवक क्रान्ति अभियान के नाम से एक नया अध्याय शुरू हो गया। १९६८ में अपने युवक अभियान के शंखनाद के रूप में **राजधर्म** नाम से पाक्षिक पत्र भी उसी समय प्रारम्भ कर दिया गया जो अभी तक निरन्तर निकल रहा है। युवकों को संगठित करने एवं जनसामान्य तक अपनी बात पहुँचाने के लिए १९६७ में गुरुकुल झज्जर को छोड़ दिया तथा कुरुक्षेत्र से दिल्ली तक की पदयात्रा का ऐतिहासिक आयोजन किया। यह यात्रा सैकड़ों गांवों, कस्बों व नगरों से होती हुई पन्द्रह दिन बाद दिल्ली के ऐतिहासिक लाल किले के समक्ष जलती मशाल हाथों में लेकर आर्य राष्ट्र की स्थापना के संकल्प के साथ सम्पन्न हुई। सन् १९६९ में हरयाणा की जनता द्वारा छेड़े गये चण्डीगढ़ आन्दोलन में युवावर्ग का नेतृत्व करते हुये स्वामी इन्द्रवेश व उनके साथी जेल गये। रोहतक सेन्ट्रल जेल में ही उन्होंने अपने अभिन्न साथी स्वामी अग्निवेश के साथ संन्यास लेने का संकल्प लिया।

७ अप्रैल १९७० को दयानन्द मठ रोहतक में स्वामी इद्रवेश जी ने स्वामी अग्निवेश एवं स्वामी सत्यपति के साथ वेदों के प्रकाण्ड विद्वान् स्वामी ब्रह्ममुनि जी से संन्यास की दीक्षा ली। उसी दिन स्वामीद्वय ने आर्य राष्ट्र के निर्माण का संकल्प लेते हुए **आर्यसभा** नाम से राजनीतिक पार्टी की भी स्थापना कर ली तथा सक्रिय राजनीति में उतर गये।

१९७२ में विधानसभा के चुनावों में आर्यसभा के दो विधायक चुने गये तथा आर्यसभा हरयाणा की सर्वाधिक वोट प्राप्त करने वाली विपक्षी पार्टी बन गई।

सन् १९७३ में किसान संघर्ष समिति का गठन करके गेहूँ के भाव को लेकर जबरदस्त आन्दोलन शुरू किया। गेहूँ का भाव बढ़वाने के लिये दिल्ली के वोट क्लब पर संसद के समक्ष आमरण अनशन किया तथा गेहूँ का भाव ७६ रुपये से १०५ रुपये करवाने में सफलता प्राप्त की।

सन् १९७४ में आर्यसमाज की सर्वाधिक सशक्त सभा आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब जिसमें दिल्ली, हरयाणा, पंजाब की आर्यसमाजें, शिक्षण संस्थायें व गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, कन्या गुरुकुल देहरादून, गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी आदि सम्मिलित थी, के चुनाव में प्रधान चुने गये तथा गुरुकुल कांगड़ी के कुलाधिपति बने। यह चुनाव हाईकोर्ट की देखरेख में सम्पन्न हुआ था।

सन् १९७५ में लोकनायक जयप्रकाश नारायण द्वारा छेड़े गये आन्दोलन में हरयाणा जनसंघर्ष समिति के अध्यक्ष के रूप में जे० पी० ने स्वामी जी को आंदोलन की बागडोर सौंपी। इस समिति में चौ० देवीलाल, स्वामी अग्निवेश, डा० मंगलसेन, मनीराम बागड़ी, चौ० शिवराम वर्मा, बलवन्तराय तायल, पं० श्रीराम शर्मा, चौ० चाँदराम, चौ० मुख्त्यारसिंह, चौ० धर्मसिंह राठी आदि हरयाणा के समस्त दिग्गज नेता सदस्य थे।

सन् १९७५ में आपातकाल के दौरान मीसा के अन्तर्गत नजरबन्द किये गये। एमरजेंसी के बाद आर्यसभा का अन्य सभी पार्टियों की तरह जनता पार्टी में विलय कर दिया गया तथा सन् १९८० के लोकसभा चुनाव में आप रोहतक से लोकदल के टिकट पर सांसद चुने गये।

सन् १९८६ में राजीव—लौंगोवाल समझौते एवं पंजाब में फैल रहे उग्रवाद के खिलाफ छोटूराम पार्क रोहतक में आपने २१ दिन की भूख हड़ताल की। अनशन समाप्ति पर तत्कालीन आर्यनेता लाला रामगोपाल शालवाले जूस पिलाने के लिए पधारे।

सन् १९६२ में शराबबन्दी आन्दोलन की शुरूआत की तथा पूर्ण शराबबन्दी लागू होने तक सफलता के साथ नेतृत्व किया। सन् १९६३ में दिल्ली से हिसार की शराबबन्दी पदयात्रा का नेतृत्व किया। इस यात्रा में लगभग पांच हजार स्त्री—पुरुष सम्मिलित हुये जो सुदूर महाराष्ट्र व गुजरात तक से आये थे। यात्रा के विराट् रूप को भांप कर हरयाणा सरकार कांप उठी थी।

सन् २००१ में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान निर्वाचित हुये। वर्तमान में आप आर्य विद्यासभा गुरुकुल कांगड़ी के प्रधान पद को सुशोभित कर रहे थे।

विविध गतिविधियां :—

१. अपने जीवन की विशेष योजना को मूर्तरूप देते हुए स्वामी जी ने सैकड़ों लोगों को संन्यास, वानप्रस्थ एवं नैष्ठिक ब्रह्मचर्य की दीक्षायें दीं तथा हजारों योग्य एवं शिक्षित युवकों को आर्यसमाज में दीक्षित किया।

२. ब्रह्मचर्य—व्यायाम प्रशिक्षण एवं युवानिर्माण शिविरों के माध्यम से पूरे देश में युवक क्रान्ति अभियान चलाया तथा आर्यसमाज में नया जीवन फूंका।

३. पदयात्राओं, शिविरों, व्यायाम—प्रदर्शनों, जनचेतना यात्राओं के माध्यम से आर्यसमाज का प्रचार करने की परम्परा उन्होंने ही प्रारम्भ की।

४. गुरुकुल मटिण्डू (सोनीपत) के वे लम्बे समय तक प्रधान रहे। इसी प्रकार सन् १९७८ से ८५ तक गुरुकुल सिंहपुरा—सुन्दरपुर जिला

रोहतक का संचालन कर संस्था को चार चाँद लगाये जो हरयाणा की समस्त आर्यसामाजिक गतिविधियों का केन्द्र बना हुआ है। गुरुकुल सिंहपुरा सुन्दरपुर (रोहतक) में महर्षि दयानन्द साधु आश्रम एवं गोशाला के भवन का निर्माण कराया एवं गुरुकुल को उन्नति के शिखर पर पहुंचाया।

५. उत्तर प्रदेश के केवलानन्द निगमाश्रम गंज बिजनौर में छह सौ बीघा भूमि एवं विशाल आश्रम है। आश्रम के अन्तर्गत संस्कृत महाविद्यालय, बी.एड. तथा नर्सिंग कालेज, विशाल गऊशाला एवं खेल स्टेडियम आदि संस्थान संचालित हो रहे हैं। यह आश्रम स्वामी सुखानन्द जी महाराज ने सन् १९८६ में स्वामी इन्द्रवेश जी को सौंप दिया था, जिसका संचालन पूज्य स्वामी इन्द्रवेश जी अभी तक कर रहे थे। इसी आश्रम की एक शाखा गंगा डेरा छींटावाला (पटियाला) पंजाब में स्थित है जो आपके निर्देशन में स्वामी ब्रह्मवेश चला रहे हैं। केवलानन्द निगमाश्रम के विशाल संस्थान का संचालन आपके कर्मठ एवं सुयोग्य शिष्य स्वामी ओम्वेश जी कुशलता के साथ कर रहे हैं।

६. महर्षि दयानन्द धाम अमृतसर (पंजाब), महर्षि दयानन्द धाम मिर्जापुर (फरीदाबाद) हरयाणा, महर्षि दयानन्द प्राकृतिक एवं योग चिकित्सा आश्रम जीन्द (हरयाणा), महर्षि दयानन्द धाम बरगड़ (उड़ीसा) आदि केन्द्र स्वामी इन्द्रवेश जी की प्रेरणा से अपने—अपने क्षेत्र में वेदप्रचार एवं सेवा का ठोस कार्य कर रहे हैं।

७. स्वामी जी की अध्यक्षता में गठित वेदप्रचार आयोजन समिति के तत्वावधान में वर्ष १९८६ में कुम्भमेला हरिद्वार में चालीस दिन का वेदप्रचार शिविर लगाया गया जिसमें गाय के घी से चतुर्वेद पारायण यज्ञ, विभिन्न सम्मेलन, योग शिविर, ऐतिहासिक शोभायात्रा एवं शास्त्रार्थ की चुनौती देकर पौराणिक जगत् में हलचल पैदा की, १९८६ के वेदप्रचार शिविर से पूर्व कुम्भ मेले में आर्यसमाज का शिविर लगभग ६० साल पहले लगा था। स्वामी जी द्वारा प्रारम्भ किये गये उक्त क्रान्तिकारी कार्यक्रम को अभी भी प्रत्येक कुम्भ मेले में चलाया जा रहा है।

८. हरयाणा में आर्यसमाज की छावनी के रूप में विख्यात दयानन्दमठ रोहतक के प्रधान बनाये जाने के बाद १९९९ से मासिक सत्संग का अनोखा कार्यक्रम प्रारम्भ किया तथा जीवन के अन्तिम क्षण तक बखूबी निभाया। आखिरी सत्संग ४ जून, २००६ को हुआ जो ८१ वां था। उनकी प्रेरणा से श्री सन्तराम आर्य उक्त सत्संग का संयोजन सफलता के साथ कर रहे हैं।

९. वैदिकधर्म के प्रचारार्थ स्वामी जी देश एवं विदेश में निरन्तर भ्रमण करते थे। सन् १९८३ में महर्षि दयानन्द बलिदान शताब्दी समारोह दिल्ली की तैयारी हेतु आप व स्वामी अग्निवेश जी हालैण्ड, जर्मनी, अमेरिका आदि देशों में आर्यजनों को प्रेरित करने पहुंचे। इसी तरह सन् १९९७ में स्वामी जी श्री विरजानन्द जी महामन्त्री सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् को साथ लेकर अमेरिका गये, जहां उन्होंने अनेक शहरों में वेदप्रचार के लिए व्याख्यान दिये। उसी दौरान वे हालैण्ड आदि देशों में भी गये। वर्ष २००० में पुनः परिषद् के प्रधान श्री जगवीरसिंह को साथ लेकर पहले अमेरिका व कनाडा गये तथ बाद में हालैण्ड, जर्मनी व इंगलैण्ड भी गये। इसी वर्ष आर्यसमाज नैरोबी (केनिया) में आर्यसमाज के कार्यक्रम के लिए लगभग पन्द्रह दिन लगाकर आये। इस साल जुलाई २००६ में भी उनका कार्यक्रम अमेरिका जाने का बना हुआ था किन्तु १२ जून २००६ को उनका देहावसान हो गया। अमेरिका में उनकी प्रेरणा से एक आश्रम के निर्माण की तैयारी थी।

१०. स्वामी जी के स्वास्थ्य में निरन्तर गिरावट आने के बावजूद वे आर्यसमाज के समस्त कार्यक्रमों में अपनी भागीदारी करते थे। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रधान चुने जाने पश्चात् स्वामी अग्निवेश जी को सभा मुख्यालय, दयानन्द भवन, रामलीला मैदान नई दिल्ली में ले जाने का अभियान स्वामी जी महाराज के नेतृत्व में ही सम्पन्न हुआ।

११. उनकी प्रेरणा से जिन महानुभावों ने संन्यास अथवा नैष्ठिक की दीक्षा ली तथा अपने आप को सामाजिक कार्य में लगाया उनमें मुख्यतया पूज्य स्वामी अग्निवेश जी, स्वामी आदित्यवेश जी, स्वामी शक्तिवेश जी, स्वामी वरुणवेश जी, स्वामी चन्द्रवेश जी, स्वामी ओम्वेश जी, स्वामी क्रान्तिवेश जी, स्वामी ब्रह्मवेश, स्वामी रुद्रवेश, स्वामी कर्मपाल, स्वामी देवव्रत, स्वामी धर्ममुनि (बहादुरगढ़), स्वामी सोमवेश (उड़ीसा), स्वामी सूर्यवेश (उत्तर प्रदेश), स्वामी आनन्दवेश (शुक्रताल), स्वामी कर्मवेश (मुजफ्फरनगर), स्वामी श्रद्धानन्द (उत्तर प्रदेश), स्वामी महानन्द (शुक्रताल), स्वामी योगानन्द (मीरापुर), स्वामी महेशानन्द (बिजनौर), स्वामी धर्मवेश (अलवर), स्वामी शिवानन्द (धरारी), स्वामी प्रकाशानन्द (पिपराली), स्वामी सिंहमुनि पलवल, स्वामी सत्यवेश (जुलाना), स्वामी सत्यवेश (गाजियाबाद), स्वामी दिव्यानन्द (हरिद्वार) आदि संन्यासियों एवं श्री रामधारी शास्त्री, आचार्य जयवीर आर्य, आचार्या कलावती, जगवीर सिंह, आचार्य हरिदेव, ब्र० विनय नैष्ठिक, प्रो० विट्ठलराव (आन्ध्र प्रदेश), सुधीर कुमार शास्त्री (उड़ीसा), प्रेमपाल शास्त्री (दिल्ली), शिवराम विद्यावाचस्पति (पलवल), सन्तराम आर्य (रोहतक), ब्र० सहन्सरपाल (मु० नगर), कु० पूनम आर्या, कु० प्रवेश आर्या (रोहतक) आदि नैष्ठिकों के नाम उल्लेखनीय हैं।

१२. स्वामी जी की प्रेरणा से ही जिन महानुभावों ने राजनैतिक गतिविधियों में भाग लेना शुरू किया तथा ख्याति अर्जित की उनमें सर्वश्री स्वामी अग्निवेश पूर्व शिक्षामन्त्री, स्वामी आदित्यवेश पूर्व विधयक एवं चेयरमैन एग्रो, स्वामी ओम्वेश गन्ना विकास मन्त्री उत्तर प्रदेश, प्रो० उमेदसिंह पूर्व विधायक (महम), मा० श्यामलाल पूर्व विधायक (पलवल), श्री राजेन्द्रसिंह बीसला पूर्व विधायक (बल्लभगढ़), श्री भवानी सिंह पूर्व विधायक (राजस्थान), श्री गंगाराम पूर्व विधायक (गोहाना), डॉ० महासिंह पूर्व मन्त्री (सोनीपत), श्री रोशनलाल आर्य पूर्व विधायक (यमुनानगर), चौ० वीरेन्द्रसिंह पूर्वमन्त्री (नारनौंद), चौ० टेकचन्द नैन पूर्व विधायक (नरवाना), चौ० अजीतसिंह पूर्व विधायक (बेरी) आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

वर्तमान में स्वामी जी दयानन्दमठ रोहतक के प्रधान के रूप में मठ में ही रह रहे थे। उनकी सेवा में पिछले सात साल से श्री ऋषिराज शास्त्री दिन—रात साथ रहे, उनके जाने का कष्ट उन्हें भी अत्यधिक है। स्वामी जी इन दिनों पुस्तक लेखन के कार्य में लगे हुये थे। उनकी पुस्तक पुनर्जन्म मीमांसा प्रकाशित हो चुकी है। पुस्तक लेखन में श्री ऋषिराज शास्त्री, कु० प्रवेश व कु० पूनम विशेष प्रयास कर रहे थे।

स्वामी इन्द्रवेश जी ने अपने जीवन का एक—एक क्षण समाज परिवर्तन के लिए लगाया। उनके तेजस्वी व्यक्तित्व से प्रभावित होकर अनेक लोगों ने अपना जीवन समाज सेवा में समर्पित किया। उनकी पुण्यतिथ पर हमें एक ही संकल्प लेना चाहिए कि जिस पवित्र निष्ठा के साथ स्वामी जी ने महर्षि दयानन्द के मिशन को आगे बढ़ाने के लिए अपने जीवन की आखिरी सांस तक संघर्ष किया उसी प्रकार हम सब सप्तक्रान्ति अर्थात् जातिवादमुक्त समाज, साम्प्रदायिकतामुक्त समाज, नशामुक्त समाज, पाखण्डमुक्त समाज, भ्रष्टाचारमुक्त समाज, नारी उत्पीड़नमुक्त समाज एवं शोषणमुक्त समाज की स्थापना के लिए कृतसंकल्प रहेंगे। हम आपस के सभी भेदभाव मिटाकर इस मिशन में जुटें, स्वामी जी की यही अन्तिम इच्छा थी।

गुरुकुल आश्रम आमसेना, जिला–नवांपारा, उड़ीसा का 52वाँ वार्षिकोत्सव धूमधाम के साथ हुआ सम्पन्न

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, वीतराग संन्यासी स्वामी धर्मानन्द जी व वैदिक विद्वान डॉ. सोमदेव शास्त्री जी, केन्द्रीय मंत्री श्री प्रताप षड़ंगी व हरियाणा के पूर्व वित्तमंत्री कै. अभिमन्यु, पूर्व सांसद श्री बसन्त कुमार पण्डा की गरिमामयी उपस्थिति से उत्सव हुआ सफलता को प्राप्त

गुरुकुल के ब्रह्मचारियों द्वारा किया गया आश्चर्यचकित कर देने वाला व्यायाम प्रदर्शन

गुरुकुल आश्रम आमसेना, जिला–नवांपारा, उड़ीसा का 52वाँ वार्षिकोत्सव धूमधाम के साथ 8 से 10 फरवरी, 2020 तक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी धर्मानन्द जी, वैदिक विद्वान् डॉ. सोमदेव शास्त्री जी, केन्द्रीय मंत्री श्री प्रताप षडंगी, हरियाणा के पूर्व वित्तमंत्री कै. अभिमन्यु व पूर्व सांसद श्री बसन्त कुमार पण्डा आदि ने उत्सव के उद्घाटन में सम्मिलित होकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

इस त्रिदिवसीय कार्यक्रम का ध्वजारोहण सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के कर–कमलों से हुआ। इस अवसर पर विभिन्न सम्मेलनों का आयोजन किया गया। प्रतिदिन होने वाले विशेष यज्ञ के ब्रह्मा पद को प्रसिद्ध वैदिक विद्वान डॉ. सोमदेव शास्त्री जी ने संभाला। प्रातःकाल तथा सायंकाल के सत्रों में विभिन्न विद्वानों, भजनोपदेशकों तथा आर्य नेताओं ने अपने उद्बोधनों से तथा विभिन्न कार्यक्रमों के द्वारा श्रोताओं का मार्गदर्शन किया गया।

इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने अपने प्रेरणादाई उद्बोधन में कहा कि आज आर्य समाज की आवश्यकता पहले से कहीं अधिक बढ़ गई है। हम सबको महर्षि दयानन्द जी के जीवन चरित्र व आदर्शों को जीवन में अपनाने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि समाज में चारों ओर अन्धविश्वास व पाखण्ड बढ़ रहा है। भोली–भाली धर्मभीरू जनता को धर्म के नाम पर गुमराह करके ठगा जा रहा है। आर्यों को चाहिए कि वह इन कुरीतियों के खिलाफ आगे आकर जन–जागरण अभियान चलायें तथा महर्षि दयानन्द जी सरस्वती द्वारा सत्यार्थ प्रकाश में किये गये पाखण्ड–खण्डन से जन–सामान्य को अवगत करायें।

स्वामी जी ने कहा कि आज देश में नशाखोरी और गौ–माता का तिरस्कार और उसकी हत्या सबसे बड़े मुद्दे हैं। उन्होंने कहा कि नशे ने हमारी युवा शक्ति को चरित्रहीन बनाकर पतन के गर्त में धकेल दिया है। युवाओं को आर्य समाज से जोड़ना आज सबसे बड़ी आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि गाय माता जिसे भारत के घर–घर में अत्यन्त महत्त्व प्राप्त है और उसको हम माता के समान सम्मान देते हैं ऐसी गाय माता को आज जितना तिरस्कृत, अपमानित करके उसकी हत्या की जा रही है यह अत्यन्त कष्ट का विषय है। उन्होंने कहा कि गौमाता को बचाने के लिए हम सबको एक–एक गाय अवश्य पालनी चाहिए और यदि हम गाय नहीं पाल सकते हैं तो गौसदनों और गौशालाओं को भरपूर दान राशि देकर हम इस कार्य में सहयोगी बन सकते हैं।

स्वामी जी ने गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के सम्बन्ध में बताते हुए कहा कि गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के माध्यम से ही देश के युवाओं को चरित्रवान बनाया जा सकता है, क्योंकि वर्तमान में देश के युवाओं को जो शिक्षा प्रणाली परोसी जा रही है वह लार्ड मैकाले की शिक्षा पद्धति है जिससे देश के युवाओं का चारित्रिक पतन हो रहा है। इसलिए हम सबको मिलकर गुरुकुलों की और अधिक स्थापना करनी चाहिए तथा प्राचीन गुरुकुल शिक्षा पद्धति के प्रचार–प्रसार को और अधिक तीव्र गति प्रदान करनी चाहिए। स्वामी जी ने कहा कि वैदिक संस्कृति को जीवित रखने के लिए संस्कृत एवं गुरुकुल संजीवनी का कार्य करते हैं। अतः यह आवश्यक है कि आर्ष गुरुकुलों को और अधिक साधन सम्पन्न एवं व्यवस्थित बनाकर गुरुकुलीय शिक्षा को आगे बढ़ाया जाये।

स्वामी आर्यवेश जी के अतिरिक्त स्वामी सुधानन्द जी, स्वामी शिवानन्द जी, स्वामी सोम्यानन्द जी, डॉ. प्रशस्य मित्र शास्त्री आदि के भी व्याख्यान होते रहे। इस अवसर पर स्वामी सुरेन्द्रानन्द जी व डॉ. पवित्रा विद्यालंकार को परममित्र मानव प्रतिष्ठान की ओर से सम्मानित किया गया।

इस कार्यक्रम को सफल बनाने में वीतराग संन्यासी स्वामी धर्मानन्द जी के संरक्षण में गुरुकुल के आचार्य एवं प्रसिद्ध आयुर्वेदाचार्य स्वामी व्रतानन्द जी महाराज, पं. विशीकेशन शास्त्री, गुरुकुल के उपाचार्य डॉ. कुंजदेव मनीषी व नैष्ठिक ब्रह्मचारी मनुदेव वाग्मी के अतिरिक्त आचार्य दया सागर, आचार्य कोमल कुमार, आचार्य महेन्द्र, आचार्य शरद कुमार, आचार्य विनय कुमार, आचार्य राकेश, आचार्य अमित नागालैंड, आचार्य सुरेश गुरुकुल कोसरंगी, आचार्य आनन्द, आचार्या पुष्पा, आचार्या लता, आचार्या कान्ता एवं आचार्य चन्द्रकला पचगांव हरियाणा आदि ने विशेष पुरुषार्थ किया। उत्सव में श्रीमती सुदक्षिणा शास्त्री मुम्बई, श्री राजेन्द्र जी रायपुर, श्री सदानन्द साहू सरपंच आमसेना आदि का भी विशेष योगदान रहा।

आर्य केन्द्रीय सभा मेरठ के तत्वावधान में ऋषि जन्म एवं बोधोत्सव का भव्य आयोजन

दिनांक 18 फरवरी, 2020 से 21 फरवरी, 2020 तक आर्य समाज थापरनगर में सम्पन्न हुआ

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी मुख्य अतिथि के रूप में हुए सम्मिलित

आर्य केन्द्रीय सभा, मेरठ के तत्वावधान में आर्य समाज थापरनगर में 18 से 21 फरवरी, 2020 तक प्रसिद्ध समाज सुधारक तथा वेदोद्धारक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का जन्म एवं बोधोत्सव का भव्य समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर डॉ. सोमदेव शास्त्री मुम्बई, श्री योगेश दत्त आर्य बिजनौर सहित अनेकों विद्वानों ने पधारकर श्रोताओं को लाभान्वित किया।

18 फरवरी, 2020 को मद्यपान व सामाजिक बुराईयों के विरुद्ध एक जनजागरण यात्रा निकाली गई। इस शोभा यात्रा में आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान श्री आर.पी. सिंह चौधरी, मंत्री श्री राजेश सेठी, कोषाध्यक्ष श्री सुनील आर्य, जिलासभा के प्रधान श्री विद्यासागर, मंत्री श्री जिले सिंह आर्य व श्री मनीष शर्मा, कोषाध्यक्ष श्री आनन्द वर्धन आदि के अतिरिक्त जिन महानुभावों का विशेष योगदान रहा उनके नाम इस प्रकार हैं – श्री हरवीर सिंह सुमन संयोजक शोभा यात्रा, श्री अशोक सुधाकर, श्री हरवीर सिंह तालियान, श्री चन्द्रकान्त, श्री मुकेश आर्य, ज्ञानमुनि वानप्रस्थ, श्री आनन्द स्वरूप गोयल, श्री भारत बन्धु रस्तोगी, श्री कर्नल वी.एस. ढाका, श्री राज कुमार तोमर, श्री वीरेन्द्र रत्नम, श्री महेन्द्र रस्तोगी, श्री सरयू प्रसाद पटेल, श्री आनन्द प्रकाश त्यागी, श्री मांगेराम, श्री अजय आर्य, श्रीमती कैलाश सोनी, श्रीमती कमला त्यागी, श्रीमती सुशीला सिंह, श्रीमती रंजना मित्तल एवं श्रीमती सरिता गुप्ता।

यह यात्रा सूरजकुण्ड पार्क से प्रारम्भ होकर हापुड़ रोड, इन्दिरा रोड, बुढ़ाना गेट, खैर नगर, जली कोठी, वैशाली मैदान, सदर गंज बाजार, दयानन्द पथ, आबूलेन, बेगमपुल, गुरुद्वारा रोड होते हुए आर्य समाज थापरनगर में सम्पन्न हुई। यात्रा का विभिन्न स्थानों पर स्वागत किया गया तथा नारे आदि के द्वारा सारे नगर को गुंजायमान कर दिया गया। इस जन–जागरण रैली का अत्यन्त सकारात्मक प्रभाव आम जनता में दिखाई पड़ा।

इस भव्य आयोजन के अन्तर्गत शहर के विभिन्न स्थानों पर अन्य विशेष कार्यक्रम आयोजित किये जाते रहे तथा रात्रि के कार्यक्रम आर्य समाज थापरनगर में ही संचालित होते थे। इन कार्यक्रमों में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जीवन पर आधारित विषयों पर चर्चाएँ होती थीं।

इस अवसर पर विशेष रूप से आमंत्रित सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने अपना उद्बोधन देते हुए महर्षि दयानन्द जी के तेजस्वी व्यक्तित्व एवं सिद्धान्तों पर विस्तार से प्रकाश डाला। स्वामी जी ने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने सभी प्रकार की संकीर्णताओं, असमानताओं तथा अन्धविश्वासों के विरुद्ध जीवन की अन्तिम सांस तक संघर्ष किया। उन्होंने बड़े से बड़े प्रलोभन को ठुकराकर उच्चकोटि का आदर्श स्थापित किया। वे एक निर्भीक संन्यासी थे। जिन्होंने अंग्रेजी साम्राज्य के विरुद्ध लड़ने के लिए अनेक क्रांतिकारियों को प्रेरित किया। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने स्त्री शिक्षा को अत्यावश्यक एवं वेद सम्मत बताया और वे इसके प्रबल प्रवक्ता रहे। उन्होंने स्त्री जाति के साथ हो रहे अत्याचारों यथा सतीप्रथा, बालविवाह एवं विधवाओं का अपमान आदि के विरुद्ध जबरदस्त आवाज उठाई। समाज में जाति के आधार पर ऊँच–नीच और छुआछूत की मानसिकता तथा कुव्यवस्था के विरुद्ध उन्होंने वर्णाश्रम व्यवस्था की महत्ता पर प्रकाश डाला। स्वामी जी ने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने राष्ट्र की आत्मा को पहचाना और आर्य संस्कृति की श्रेष्ठता को प्रतिपादित किया। उन्होंने धार्मिक पाखण्डों तथा अन्धविश्वासों को खण्ड–खण्ड कर इस देश के नागरिकों को नव–चेतना से अनुप्राणित कर दिया। स्वामी जी की मान्यता थी कि जो सत्य है और जो तर्क पर खरा उतरता है वह सदैव स्वीकार होना चाहिए और जो इससे भिन्न है वह त्याज्य होना चाहिए।

स्वामी आर्यवेश जी ने महर्षि दयानन्द के जीवन को परिवर्तित करने वाली उस महत्त्वपूर्ण घटना का विवरण सुनाते हुए कहा कि शिवरात्रि के दिन पूजा करते हुए रात्रि में जब सारे भक्तगण सो गये थे उस समय सच्चे शिव की महत्ता को धारण किये हुए बालक मूलशंकर ने जब शिवलिंग को अपवित्र करते हुए चूहों को देखा तो उनके हृदय में विचार उठा कि जो शिव अपने ऊपर चढ़े हुए चूहों से अपनी रक्षा नहीं कर सकता वह किसी अन्य की रक्षा क्या करेगा। यह क्रांतिकारी विचार उठते ही महर्षि दयानन्द सच्चे शिव की खोज में घर से निकल पड़े। उन्होंने बाद में सच्चे शिव के दर्शन तो किये ही वे स्वयं भी शिव स्वरूप हो गये। लोक मंगल में लग गये। स्वामी जी ने कहा कि आज आवश्यकता इस बात की है कि समाज में फैले अन्धविश्वास, धार्मिक पाखण्ड सहित अनेकों सामाजिक बुराईयों को जड़मूल से समाप्त किया जाये। आज ये विशेष पर्व मनाते हुए हम सबको संकल्प लेना है कि महर्षि दयानन्द के बताये रास्ते पर चलते हुए सामाजिक बुराईयों को जड़मूल से समाप्त करेंगे।

इस अवसर पर प्रतिदिन होने वाले विशेष यज्ञ के ब्रह्मा पद को आचार्य सोमदेव शास्त्री जी ने सुशोभित किया और अपने विद्वतापूर्ण प्रवचनों से श्रोताओं को लाभान्वित किया। समय–समय पर बिजनौर से पधारे प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री योगेशदत्त आर्य ने मनोहारी भजनों से श्रोताओं का दिल जीत लिया। कार्यक्रम अत्यन्त सफल रहा।

आर्ष गुरुकुल ब्राह्म महाविद्यालय कामारेड्डी, जिला–निजामाबाद, तेलंगाना का वार्षिकोत्सव भव्यता के साथ सम्पन्न

दिव्य मानव निर्माण योजना से ही राष्ट्र आगे बढ़ेगा

– स्वामी ब्रह्मानन्द

आर्ष शिक्षा के विस्तार से ही संस्कृति की सुरक्षा होगी

– स्वामी आर्यवेश

गत् 28 फरवरी से 1 मार्च, 2020 को आर्ष गुरुकुल ब्राह्म महाविद्यालय कामारेड्डी, जिला–निजामाबाद, तेलंगाना का वार्षिकोत्सव बड़ी भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर विविध कार्यक्रम आयोजित किये गये। 1 मार्च, 2020 को सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी उत्सव में सम्मिलित होने के लिए आर्ष गुरुकुल पहुंचे, जहाँ उनका परम्परागत तरीके से भव्य स्वागत किया गया। सैकड़ों स्त्री पुरुषों ने तेलंगाना की परम्पराओं के अनुरूप ढोल–मजीरे बजाकर स्वामी जी का स्वागत किया उनके साथ गुरुकुल के संचालक और आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान संन्यासी स्वामी ब्रह्मानन्द जी, गुरुकुल के मंत्री युवा विद्वान आचार्य वेद सिन्धु जी भी थे। यज्ञ के अवसर पर मंच पर पहुंचने के बाद स्वामी ब्रह्मान्द जी एवं स्वामी आर्यवेश जी ने सभी याज्ञिक महानुभावों को आशीर्वाद प्रदान किया और इस अवसर पर श्री नरसिंहलू आर्य को स्वामी आर्यवेश जी ने वानप्रस्थ की दीक्षा देकर उनका नाम महात्मा देवमुनि रखा। सभी उपस्थित लोगों ने वानप्रस्थ में दीक्षित देवमुनि जी महाराज का विशेष अभिनन्दन किया। यज्ञ के आचार्य के रूप में श्री वेदमित्र शास्त्री ब्रह्मा पद पर सुशोभित थे उनके साथ डॉ. नरेन्द्र शास्त्री व आचार्या सविता जी ने भी यज्ञ में सहयोग किया। इस समारोह की अध्यक्षता सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने की तथा मंच का संचालन आचार्य वेद सिन्धु शास्त्री ने संभाला। सर्वप्रथम गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने सुमधुर भजन प्रस्तुत किये और उनका मार्गदर्शन श्री इप्पकायला नरसय्या जी ने किया। स्वामी ब्रह्मानन्द जी ने गुरुकुल के ब्रह्मचारियों द्वारा तैयार किये गये संवाद को प्रस्तुत कर सभी दर्शकों व श्रोताओं को आश्चर्यचकित कर दिया। उन्होंने गुरुकुल के ब्रह्मचारियों से शरीरं माध्यम खलु धर्म साधनम्। के सम्बन्ध में अनेक प्रसंग पूछे जिनका सभी ब्रह्मचारियों ने त्वरित उत्तर देकर अपनी प्रतिभा का परिचय दिया।

इस अवसर पर स्वामी ब्रह्मानन्द जी ने अपने सम्बोधन में कहा कि वर्तमान शिक्षा प्रणाली अधूरी है और मनुष्य के निर्माण की कोई भी योजना कहीं दिखाई नहीं देती। अतः यह आवश्यक है कि बच्चों को जीवन के प्रारम्भिक काल में आर्ष शिक्षा अवश्य दी जानी चाहिए। उन्होंने बताया कि वे एक ग्रन्थ तैयार कर रहे हैं जिसमें दिव्य मानव निर्माण की बृहद योजना प्रस्तुत की जायेगी। उनकी इच्छा है कि उस ग्रन्थ का विमोचन देश के प्रधानमंत्री से करवाया जाये और उनसे यह आग्रह किया जाये कि इस ग्रन्थ को पाठ्यक्रम में अनिवार्य रूप से पढ़ाने की व्यवस्था हो। स्वामी जी ने कहा कि वे मनुष्य के निर्माण से ही राष्ट्र के निर्माण की कल्पना करते हैं और इस दिशा में वे प्रयत्नशील हैं। उन्होंने अपने गुरुकुल को भी इस मानव निर्माण योजना का एक प्रकल्प बताया। उन्होंने सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से कहा कि आप सभी गुरुकुलों में आर्ष शिक्षा को अनिवार्य रूप से पढ़ाने की व्यवस्था करवायें। आर्ष शिक्षा का अन्य विषयों से कोई विरोध नहीं है बल्कि प्रारम्भ में बच्चा आर्ष शिक्षा से यदि पुष्ट होगा तो फिर वह जीवन में कभी भी भटक नहीं सकता।

अपने ओजस्वी उद्बोधन में स्वामी आर्यवेश जी ने स्वामी ब्रह्मानन्द जी के इस संकल्प और प्रयास की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि लॉर्ड मैकाले की शिक्षा नीति ने देश के युवाओं को व बच्चों को अंग्रेजियत की मानसिकता से पूरी तरह से रंग दिया है और हमारी संस्कृति का लोप होता जा रहा है। अतः यह आवश्यक है कि देश में शिक्षा नीति ऐसी बनाई जाये जिसमें बच्चे के निर्माण की व्यवहारिक व प्रभावशाली योजना शामिल हो, केवल विषय की जानकारी से कोई व्यक्ति शिक्षित नहीं हो जाता, बल्कि अच्छे संस्कारों से ही वह शिक्षित होता है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में संस्कारों का कोई महत्त्व दिखाई नहीं देता। अतः स्वामी ब्रह्मानन्द जी द्वारा किये जा रहे प्रयत्न को गम्भीरता से लिया जाना चाहिए। स्वामी आर्यवेश जी ने जहाँ बच्चों के निर्माण के लिए संस्कारों के महत्त्व को दर्शाया वहीं बड़ी उम्र के लोगों को वानप्रस्थ व संन्यास लेने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने वर्णाश्रम व्यवस्था पर विशेष जोर दिया था, किन्तु आज न तो वर्ण व्यवस्था और न ही आश्रम व्यवस्था व्यवहार में प्रचलित हो पा रही है।

दोपहर बाद अन्तिम सत्र प्रारम्भ हुआ जिसमें आचार्य सविता जी, डॉ. नरेन्द्र शास्त्री, श्रीमती मधुश्री आदि के तेलगू भाषा में व्याख्यान हुए। इस अवसर पर गुरुकुल समिति के अध्यक्ष श्री पेद्दा बाजन्ना, मंत्री आचार्य वेद सिन्धु जी, उत्सव समिति के अध्यक्ष श्री गद्दमपाल रेड्डी, मंत्री श्री जर्नादन रेड्डी, सदस्य श्री सिद्धि रामुलू, श्री प्रणव मुनि, श्री लक्ष्मी नारायण, आचार्य वेदमित्र, महात्मा ओममुनि, महात्मा प्रणवमुनि, आचार्य वेद आलोक आदि ने सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी को शॉल, स्मृति चिन्ह व श्रीफल देकर सम्मानित किया।

अपने अध्यक्षीय भाषण में स्वामी आर्यवेश जी ने मनुर्भव पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आज हर व्यक्ति स्वार्थ एवं संकीर्णता से ग्रस्त है। अपनी ही उन्नति में वह संतुष्ट रहता है। इसीलिए समाज में दुःख एवं कलह व्याप्त हो रहा है। उन्होंने कहा कि परमात्मा ने वेद में मनुर्भव का संदेश देकर मानव मात्र को प्रेरणा दी है कि वे मानवता के गुण अपनायें। सही अर्थों में मनुष्य बनें और मनुष्य बनने के लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा दी गई मनुष्य की परिभाषा को एक बार अपने ऊपर लागू करके देख लें। महर्षि दयानन्द जी कहते हैं कि, ''मनुष्य उसी को कहना, जो मननशील होकर स्वात्मवत् अन्यों के सुख–दुःख, हानि–लाभ को समझे। अन्यायकारी बलवान से न डरे और धर्मात्मा निर्बल से भी डरता रहे। इतना ही नहीं किन्तु अपने सर्व सामर्थ्य से धर्मात्माओं की चाहे वे महा अनाथ, निर्बल और गुणरहित ही क्यों न हों, उनकी रक्षा, उन्नति, प्रियाचरण करे और अधर्मी चाहे चक्रवर्ती, सनाथ, महाबलवान, गुणवान भी क्यों न हो, तथापि उसका नाश, अवनति और अप्रियाचरण सदा किया करे। अर्थात् जहाँ तक हो सके वहाँ तक अन्यायकारियों के बल की हानि और न्यायकारी के बल की उन्नति सर्वदा किया करे। इस काम में चाहे उसको कितना ही दारूण दुःख प्राप्त हो, चाहे प्राण भी चले जाये परन्तु इस मनुष्यपन रूप धर्म से पृथक कभी न होवे।'' इस प्रकार से जब तक हम समाज के अन्य लोगों और समस्त प्राणियों के प्रति सद्भावना व सम्मान नहीं रखेंगे उनके सुख–दुःख को अपना सुख–दुःख नहीं समझेंगे तब तक हम मनुष्य कहलाने के अधिकारी नहीं होंगे। इस सम्बन्ध में मार्मिक दृष्टान्त प्रस्तुत करके स्वामी जी ने अपने बात की मजबूती से पुष्टि की। उन्होंने कहा कि आर्य समाज को आगे बढ़कर लोकशक्ति संगठित करना चाहिए। लोकशक्ति ही राज्य शक्ति के ऊपर अंकुश का कार्य करती है। यदि समाज में बढ़ी हुई नशाखोरी, जातिवाद, साम्प्रदायिकता, अश्लीलता, नारी उत्पीड़न, धार्मिक अन्धविश्वास, भ्रष्टाचार व शोषण आदि समस्याओं के विरुद्ध व्यापक जन समर्थन जुटाकर लोकशक्ति को खड़ा किया जाये तो राज्यशक्ति को भी झुकाया जा सकता है। स्वामी आर्यवेश जी ने गोरक्षा महा अभियान को मजबूत करने का आह्वान किया। उन्होंने गोवंश की दुर्दशा पर मार्मिक विचार प्रस्तुत किये। स्वामी जी ने कहा कि स्वामी ब्रह्मानन्द जी महाराज वर्तमान में आर्य जगत के वरिष्ठ संन्यासी ही नहीं अपितु लब्ध प्रतिष्ठ विद्वान हैं जिन्होंने ज्योतिष शास्त्र पर विशेष कार्य किया है। उनके संरक्षण में चल रहा मानव निर्माण योजना का महत्त्वपूर्ण प्रकल्प देशभर में फैले इसके लिए मैं भी विशेष प्रयत्न करूंगा। उन्होंने सम्पूर्ण गुरुकुल समिति का आभार व्यक्त किया। शांति पाठ के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई के महामंत्री श्री अरुण अबरोल जी की धर्मपत्नी

श्रीमती सुधा अबरोल जी का आकस्मिक निधन

आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई के महामंत्री श्री अरुण अबरोल की धर्मपतनी श्रीमती सुधा अबरोल जी का रविवार दिनांक 1 मार्च, 2020 को देहान्त हो गया। वे 60 वर्ष की थीं। उनका अन्तिम संस्कार 2 मार्च को सैकड़ों लोगों की उपस्थिति में हिन्दू श्मशान भूमि ओशिवारा में पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न किया गया। श्रीमती सुधा अबरोल जी अत्यन्त हँसमुख स्वभाव, मीठी वाणी एवं मिलनसार व्यक्तित्व से ओत–प्रोत थीं। वे अपने पति श्री अरुण अबरोल जी के साथ आर्य समाज के धार्मिक तथा सामाजिक कार्यक्रमों में कन्धे से कन्धा मिलाकर सहयोग करती थीं। अत्यन्त धर्मपरायणा श्रीमती सुधा जी ने अपने जीवन में निरन्तर शुभ कर्मों की एक लम्बी श्रृंखला स्थापित कर नारी जाति के उत्थान के लिए कठिन प्रयास किये। वे अपने पीछे भरा पूरा सम्पन्न परिवार छोड़कर गई हैं।

4 मार्च, 2020 को आर्य समाज सांताक्रूज में उनकी पुण्य स्मृति में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुम्बई के अनेक प्रतिष्ठित महानुभावों के अतिरिक्त विभिन्न आर्य समाजों के पदाधिकारियों ने भारी संख्या में पहुँचकर श्रीमती सुधा अबरोल जी को श्रद्धा सुमन अर्पित किये।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने उनके निधन पर गहरा दुःख प्रकट करते हुए श्रीमती सुधा अबरोल जी को आर्य समाज की निष्ठावान कार्यकर्त्री बताया। वे आर्य समाज के कार्यों में बढ़–चढ़कर भाग लेती थीं तथा उन्हें आर्य समाज की शान कहा जाता था। उनके निधन से आर्य समाज को अत्यन्त आघात पहुँचा है। मैं परमपिता परमात्मा से उनकी आत्मा की शांति एवं सद्गति तथा पारिवारिकजनों को इस असह्य कष्ट को सहन करने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना करता हूँ।

सर्वात्मना समर्पित आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता

ब्र. नन्दकिशोर जी का आकस्मिक निधन

आर्य जगत में चलते–फिरते आर्य समाज के रूप में विख्यात ब्रह्मचारी नन्द किशोर आर्य जी का गत् 17 फरवरी, 2020 को आकस्मिक निधन हो गया है। ब्रह्मचारी नन्द किशोर जी को आर्य समाज के प्रचार–प्रसार करने में अत्यन्त आनन्द का अनुभव होता था। वे सारे देश में घूम–घूमकर वैदिक धर्म एवं आर्य समाज के प्रचार–प्रसार कार्यों में सदैव संलग्न रहे। ब्रह्मचारी जी एक अत्यन्त कर्मठ तपस्वी एवं विद्वान कार्यकर्ता थे। उन्होंने अपनी विद्वता से अनेक छोटे–छोटे ट्रैक्ट छपवाकर सारे देश के आर्यजनों में वितरित करके आर्य समाज के सिद्धान्तों तथा मन्तव्यों का बृहद प्रचार किया। उनका अन्त्येष्टि संस्कार 19 फरवरी, 2020 को प्रातःकाल होशंगाबाद में ही सैकड़ों लोगों की उपस्थिति में पूर्ण वैदिक रीति से किया गया।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने उनके निधन पर गहरा दुःख प्रकट करते हुए कहा कि ब्रह्मचारी नन्दकिशोर जी जैसे कर्मठ आर्य महानुभाव का हम सबके बीच से अचानक चले जाना आर्य जगत् के लिए गहरा आघात एवं दुःखद समाचार है। उनके निधन से आर्य समाज संगठन की अपूर्णीय क्षति हुई है। स्वामी जी ने उनकी आत्मा की शांति एवं सद्गति की प्रार्थना करते हुए उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित की।

वैदिक मिशन मुम्बई के तत्वावधान में

विशाल गुरुकुल सम्मेलन का आयोजन

20, 21 एवं 22 मार्च, 2020

वैदिक मिशन मुम्बई के तत्वावधान में 20 से 22 मार्च, 2020 तक महर्षि दयानन्द वैदिक गुरुकुल परिषद् के अध्यक्ष स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता में पद्मिनी आर्य कन्या गुरुकुल प्रतापनगर, चित्तौड़गढ़ राजस्थान में एक संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है। इस संगोष्ठी में वैदिक सिद्धान्तों का गहन अध्ययन, गुरुकुल शिक्षण प्रणाली का पारिवारिक, सामाजिक और राष्ट्रीय विकास में योगदान, आर्ष पाठ विधि का संरक्षण, गुरुकुलों का सुदृढ़ संगठन, सैद्धान्तिक पाठ्यक्रम की आवश्यकता इत्यादि विषयों पर गहन चिन्तन किया जायेगा। इस अवसर पर आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान्, संन्यासीगण तथा आर्यनेता पधार रहे हैं। संगोष्ठी को सफल बनाने के लिए अधिक से अधिक संख्या में पधारकर लाभान्वित हों।

गुरुकुल सम्मेलन में अनेकों वरिष्ठ आर्य संन्यासी, विद्वान, विदुषी तथा आर्यनेता एवं गुरुकुलों के आचार्य भारी संख्या में पधार रहे हैं। आप सब की उपस्थिति प्रार्थनीय है।

– आचार्य सोमदेव शास्त्री, अध्यक्ष, वैदिक मिशन मुम्बई

होली का वैदिक स्वरूप

– मनुदेव 'अभय' विद्यावाचस्पति

संसार में जीवित प्राणियों में मनुष्य परमात्मा की सर्वश्रेष्ठ कृति है। वेदों के अनुसार इस मनुष्य योनि द्वारा वह तप-त्याग और तपस्या द्वारा आवागमन के बन्धन से मुक्त होकर मोक्षानन्द का रसास्वादन कर सकता है। मनुष्य से इतर योनियों के प्राणियों को यह सुविधा, स्वतंत्रता, स्वावलम्बन और स्वाभिमान प्राप्त नहीं है। मोक्षानन्द के लिए सत्यानुरागी, सत्याग्रही होना बहुत जरूरी है।

भारतीय जीवन पद्धति में इसी उद्देश्य को दृष्टिगत रखकर प्रकृति और परमात्मा के निकट रहने का चिन्तन है। भारतीयों के समस्त आचार और व्यवहार प्रकृति, ऋतुएँ और समयावधि ध्यान में रखकर विभिन्न पर्वों का निर्धारण किया है। जिजी विषा का पर्याय जीवन अर्थात जी़वन=जीवन है। वन प्रकृति का ही अंग है। पर्वों का निर्धारण प्रकृति की परिवर्तन शीलता को रखकर किया गया है।

मकर संक्रांति के पश्चात् बसन्त पञ्चमी के स्वागत करने को मन आतुर रहता है। अभी-अभी डेढ़ मास पूर्व बसन्त पञ्चमी के पीलेपन का आनन्द उठाकर पूर्णरूपेण तृप्त भी नहीं हुए थे कि यह होलिका पर्व, नव संस्येष्टि पर्व उत्साहवर्द्धन हेतु उपस्थित हो गया। हमारे भारतीय समाज शास्त्रियों की यह विशेषता रही है कि पर्वों का निर्धारण हो अथवा संस्कारों को सम्पन्न कराने का मंगल अवसर ही हमें आस्तिक भाव रखते हुए परमात्मा के प्रतिपूर्ण आस्था बनाये रखना है। यजुर्वेद के अनुसार ईशावास्य सर्वमिदम्, जगत्याम् जगत। त्येन त्यक्तेन .....। अर्थात् परमात्मा सृष्टि के कण-कण में व्याप्त है। यह सब उसकी ही वस्तु है। हमें इन सभी वस्तुओं का उपभोग त्याग भाव से करना चाहिए। नो निडी नो ग्रिडी।

पुरुषार्थ, श्रम, आत्मविश्वास तथा परमेश्वर की कृपा से आषाढ़ी फसल पककर तैयार हो गई है। परिवार, समाज तथा राष्ट्र में इसका उपयोग करने के पहले इसे परमात्मा को सौंपकर तत्पश्चात् यज्ञ शेष, प्रसाद के रूप में इसका ग्रहण करना चाहिए। यज्ञों वै श्रेष्ठ तमं कर्मः अर्थात यज्ञ देव पूजा, संगतिकरण तथा दान द्वारा ही सम्भव है। इसलिए इस नव (नया) सस्य= अन्न को येष्टि=यज्ञ तथा भगवान की पूजा-अर्चना कर तथा धन्यवाद, कृतज्ञता प्रकट कर ही इसका अनुपान करें।

वैदिक काल में इस अवसर पर प्रत्येक कृषक के यहाँ नव-संस्येष्टि यज्ञ हुआ करते थे। इसे सामूहिक रूप से भी मनाया जाता था।

महर्षि दयानन्द के बोधोत्सव का सन्देश अथवा दूसरे शब्दों में कह सकते हैं, क्रान्तिकारी महर्षि दयानन्द और उनका दिव्य सन्देश भी तो यही है। सामूहिकता ही आनन्ददायी जीवन है, सामाजिकता ही आवरण और आचरण है।

सामूहिक आनन्द की महिमा न्यारी है। ग्रामों में सामूहिक रूप से किया जाने वाला यह नव संस्येष्टि यज्ञ ही वर्तमान 'होलिकोत्सव' का अपभ्रंश रूप है। विदेशों में भी कृषक 'न्यू इयर्स डे' अथवा सेंट वेलन्टाइन डे को भी सामूहिक रूप से मनाते हैं। विदेशी संस्कृति में 'काम' का सामाजीकरण अभी तक नहीं हो पाया। भारतीय समाजशास्त्रियों ने 'काम' को चार पुरुषार्थों धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष में से काम का सामाजीकरण करके पारिवारिक रूप प्रदान कर इसे 'विवाह' नामक संस्था में स्वीकृत किया। इतना ही नहीं हमारे वैदिक 16 संस्कारों में इसे 13वाँ संस्कार अंगीकृत कर सभ्यता का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण प्रस्तुत किया। यही कारण है कि पश्चिमी सभ्यता विज्ञान के कारण कितनी ही उन्नत हो गई हो, परन्तु संस्कारों के अभाव में यह पाश्चात्य सभ्यता बहुत ही पिछड़ी हुई है। दयनीय है।

कृषि प्रधान देश होने के कारण हमारे यहाँ आषाढ़ी फसलों के यवों (जौओं) से देवयज्ञ (हवन) करने के लिए इस नये अन्न की आहुति देकर परमात्मा के प्रति कृतज्ञता तथा उसकी कृपा की अपेक्षा के विचारों से जौ की आहुति दी जाती है। यज्ञ के शाकल्य में जौ का आटा ही मिश्रित किया जाता है।

संस्कृत में अग्नि में भूने हुए अर्ध पक्व अन्न को 'होलक' कहते हैं शब्द कल्पद्रुम कोष के अनुसार -

तृणाग्नि भृष्टार्द्ध पक्वशमी धान्यं होलकः। होलाइति हिन्दी भाषा। अर्थात् तिनकों की अग्नि में भुने हुए अधपके शमीधान्य (फली वाले) अन्न को 'होलक' (होला) कहते हैं। यह होला स्वल्पवात है और मेद (चर्बी) कफ और श्रम (थकान) के दोषों का शमन करता है। यह सर्व विदित है कि ग्रीष्म ऋतु में सत्तू का विशेष उपयोग किया जाता है। देवयज्ञ के पश्चात् यह प्रसाद के रूप में बाँटा जाता है। क्योंकि श्रुति कहती है - केवलाधो भवति केवलादी अर्थात अकेला खाने वाला केवल पाप खाने वाला है। बाँटकर खाओ। चौके में माँ पहली रोटी गाय के लिए बनाती है।

भूखा प्यासा पड़ा पड़ोसी, तूने रोटी खाई तो क्या?

सबसे पहले पूछ कर फिर खाना तू खाया कर।

हमारा यह पर्व होलीपर्व सामाजिक एकता सामाजिक सशक्तिकरण का पर्व है। इसमें समाज के सभी वर्गों, समुदायों, समूहों के व्यक्तियों को एक साथ बैठाकर सामाजिक ऐक्य का आनन्द उठाया जाता है। विगत समय यदि कारण वश कोई भूल या अपराध हो गया हो तो इस आनन्दोत्सव पर उसे क्षमा कर प्रसन्न हृदय से गले लगाया जाता है। इस स्थान पर यह ध्यान रखना है कि समाज की महिला वर्ग का पूरा सम्मान करते हुए श्रद्धा सहित उनके साथ शिष्टता का व्यवहार किया जाये। यह देश राम और लक्ष्मण का देश है। अनुज लक्ष्मण अपनी भाभी सीता का अत्यधिक सम्मान करते थे। उनकी दृष्टि केवल सीता जी के चरणों तक सीमित रही। उन्होंने कभी भी सिर से लेकर घुटनों तक कभी नहीं निहारा। राम के द्वारा पूछने पर लक्ष्मण ने यह कहा था-

नाहमं जानामि केमूरे नाहं जानामि कुण्डले।
नुपरे तु विजानामि नित्यं पादाभि वन्दनाम्।।

वाल्मीकि रामायण 6/134

ऐसी शानदार है हमारी भारतीय संस्कृति, जिसमें नारी को प्रतिष्ठित किया है। यज्ञों में नारी को ब्रह्मा बनाया जाता है।

दुर्भाग्यवश आधुनिक भारतीय युवक पश्चिमी भोगवादी संस्कृति से प्रभावित होकर सुरा-सुन्दरी का भक्त बनता जा रहा है। नशा चाहे किसी भी वस्तु का हो, वह सर्वप्रथम बुद्धि का नाश करता है और बाद में शरीर का। नशा अर्थात् नाश। भ्रमवश आधुनिक भारतीय युवतियाँ भी युवकों से पीछे नहीं हैं। ध्यान रहे, यह कौशल्या, सुमित्रा, अहिल्याबाई, लक्ष्मीबाई का देश है। इनके जीवन द्वारा भारतीय युवतियों को सशक्तिकरण की ओर मुड़ना चाहिए।

इस अवसर पर यदि हिरण्यकश्यप, होलिका और भक्त प्रहलाद की चर्चा न करें, तो सब व्यर्थ हो जायेगा। पुराणों के अनुसार हिरण्यकश्यप शिव का और प्रहलाद विष्णु का भक्त था। शैव नहीं चाहते थे कि उनके घर और राज्य में विष्णु की पूजा भक्ति की जाये। फिर क्या, पिता और पुत्र का संघर्ष चला। शास्त्रों के अनुसार पुत्र को अपने पिता को आदर्श मानकर उसका अनुकरण करना चाहिए। परन्तु तैत्तरीय उपनिषद् में यह भी कहा है -

'यदि पिता अनुचित आदेश दे तो उसकी नम्रता पूर्वक अवज्ञा कर देना चाहिए। गुरु को आदर्श मानते हुए भी गुरु के किसी दोषपूर्ण आचरण को स्वीकार नहीं करना चाहिए। 'बस भक्त प्रहलाद ने विष्णु का भक्त बने रहकर अपने अत्याचारी पिता की आज्ञा की अवहेलना विनम्रता पूर्व की। उसने पिता का प्रतिकार नहीं किया। प्रहलाद सत्याग्रही था इस कारण सहिष्णु, निर्भीक तथा आत्मा की अमरता में विश्वास करता हुआ परमात्मा के प्रति आस्थावान् था यद्यपि हिरण्यकश्यप ने उसे मारने के कई उपाय किये, परन्तु वह असफल ही रहा। अन्त में उसने अपनी छोटी बहन होलिका की सहायता से अग्नि में बैठाकर प्रहलाद को जलाकर मारने का षड्यन्त्र किया। 'हारेगा हरामी' के अनुसार बालक प्रहलाद जिन्दा बच गया और बुआ जी जलकर राख हो गई। परमात्मा न्यायकारी (अर्यमा) है।

प्रहलाद के इस पावन चरित्र से इस स्वतंत्र भारत के युवा वर्ग को शिक्षा ग्रहण करना चाहिए। उन्हें सत्य को ग्रहण करने और असत्य का त्याग करने को सदैव तत्पर रहना चाहिए। युवा बलवान, राष्ट्र बलवान।

आज देश को स्वतन्त्र हुए 64 वर्ष हो गये हैं। देश की 32 प्रतिशत युवा शक्ति आदर्शों के अभाव में किंकर्त्तव्य विमूढ़ हो रही है। भारत के इतिहास में सैकड़ों युवाओं अर्जुन, अभिमन्यु, राम, कृष्ण, लवकुश, भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद, खुदीराम बोस, सुभाष चन्द्र बोस तथा वीर सावरकर, बालक मूल शंकर (दयानन्द) ईश्वर चन्द्र, विद्यासागर, स्वामी विवेकानन्द जैसे अनेक आदर्श युवाओं के जीवन प्रस्तुत हैं। इनसे ही प्रेरणा प्राप्त कर देश का युवा वर्ग अपने देश को संसार में सर्वश्रेष्ठ बनाकर दिखा सकते हैं। केवल संकल्प की आवश्यकता है। इस मंगलमय अवसर पर देश के युवा वर्ग से ऐसी ही अपेक्षा है कि भारत की संस्कृति और सभ्यता के अनुसार अपने जीवन को पवित्र और सात्विक बनायें। ओ३म् शम्।

'सुकिरण' अ/13, सुदामानगर,
इन्दौर-452002 (मध्य प्रदेश)

ओ३म्

समता–समरसता के संग आओ ! खेले वैदिक रंग

– राधेश्याम आर्य, विद्यावाचस्पति

सत्य सनातन शुचितर संस्कृति, दिव्य हमारी नष्ट हो रही।
सत्य शिवम् सुन्दरता पूरित, परम्परा है विनष्ट हो रही।
होली खेलें आज सभी हम समता-समरसता के संग।
आओ! खेलें वैदिक रंग।।

अट्ठहास कर रही होलिका, जलता धू-धू कर प्रह्लाद।
लुप्त हुआ है मानवता का, मंगलकारी सा आह्लाद।
जले दनुज वृत्तियों की होली मानव उर में उठे उमंग।
आओ! खेलें वैदिक रंग।।

होता आज समाज विखण्डित, टूट रहे परिवार हमारे।
दोषयुक्त हैं हुए आचरण, आज हमारे क्यों सारे?
आदर्शों से पूरन हों हम उठे हृदय में मृदुल तरंग।
आओ! खेलें वैदिक रंग।।

जातिवाद का दानव बढ़ता, राजनीति का सह पाकर।
बना विषाक्त समाज हमारा, जो था सदियों से शुचितर।
बढ़ते चरण दनुजता के हम निर्भय होकर कर दे भंग।
आओ! खेलें वैदिक रंग।।

शौर्य शक्ति साहस का हममें, हो फिर से अनुपम संचारणं,
समग्र समस्याओं का होवे समाधान व शीघ्र निवारण।
वेद पथिक हम बनें सभी जन, चढ़े पुनः वेदों का रंग।
आओ! खेलें वैदिक रंग।।

- मुसाफिरखाना, सुल्तानपुर (उ. प्र)

ओ३म्

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/18-20
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2018-20]

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें
www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।
ई-मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

ग्रीन एवेन्यू अमृतसर (पंजाब) में अथर्ववेद पारायण यज्ञ का भव्य आयोजन सम्पन्न

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के प्रवचनों की रही धूम

यज्ञ के आयोजक श्री जवाहर लाल मेहरा ने किया सभी का धन्यवाद

गत् 25 फरवरी, 2020 से 28 फरवरी, 2020 तक ग्रीन एवेन्यू, अमृतसर (पंजाब) में श्री जवाहरलाल मेहरा के संयोजन में अथर्ववेद पारायण यज्ञ का भव्य आयोजन किया गया। यज्ञ में सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के प्रवचनों की विशेष चर्चा रही। इस अवसर पर दयानन्द मठ चम्बा के अध्यक्ष आचार्य महावीर सिंह शास्त्री व उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सरस्वती देवी आर्या, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामंत्री श्री ओम प्रकाश आर्य, डॉ. नवीन आर्य, श्री जनकराज दुग्गल, श्री हीरालाल दुग्गल, श्री रमेश दत्त आर्य, श्री देशराज आदि अमृतसर, श्री वीरेन्द्र अग्रवाल व उनकी धर्मपत्नी श्रीमती किरण अग्रवाल जालन्धर, बहन ईशा खन्ना व उनके पति श्री जितेन्द्र मोहन खन्ना दिल्ली आदि के अतिरिक्त अनेक गणमान्य महानुभावों ने सम्मिलित होकर यज्ञ को सफल बनाया। प्रातः 8 से 11 बजे तक एवं सायं 3 से 6 बजे तक चले इस अथर्ववेदीय यज्ञ में ब्र. उदयवीर आर्य व ब्र. शिव शास्त्री ने बहुत सुन्दर वेद पाठ किया। यज्ञ के मुख्य यजमान श्री जवाहर लाल मेहरा के सुयोग्य सुपुत्र श्री आशीष मेहरा व उनकी धर्मपत्नी श्रीमती पूजा मेहरा ने पूरी श्रद्धा, निष्ठा एवं समर्पित भाव से अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। यज्ञ एवं अन्य सभी व्यवस्थाओं में श्री राकेश एवं उनकी पत्नी श्रीमती साक्षी, आशीष जी के सुपुत्र चि. सात्विक मेहरा व उनके साथी यजत, आशीष जी की दोनों बेटियां कु. ;'k|h] व कुमारी दीक्षा आदि ने अथक मेहनत करके सारी व्यवस्था को संभाला। यज्ञ की सम्पूर्ण व्यवस्था में श्री जवाहर लाल मेहरा स्वयं संयोजक की भूमिका निभा रहे थे। यह यज्ञ समस्त

लोगों के आकर्षण का विषय रहा क्योंकि जिस वैदिक विधि से और श्रद्धा व निष्ठा के साथ यज्ञ किया गया उससे सभी लोग अत्यन्त प्रभावित हुए साथ ही स्वामी आर्यवेश जी के सारगर्भित प्रवचनों को सुनने के लिए प्रतिदिन भीड़ उमड़ती रही। 28 फरवरी, 2020 को पूर्णाहुति के दिन स्वामी आर्यवेश जी ने उपस्थित जनसमूह को जीवन में कुछ नये संकल्प लेने के लिए प्रेरित किया तथा अनेक लोगों ने जहाँ अपने व्यसन छोड़ने की प्रतिज्ञा की वहीं प्रतिदिन प्रातः–सायं ईश्वर उपासना अर्थात् संन्ध्या करने का भी संकल्प लिया। स्वामी आर्यवेश जी ने सामान्य जीवन में चल रही अनेक रूढ़ियों, अन्धविश्वासों एवं धार्मिक पाखण्डों पर तार्किक व्याख्यानों से संभ्रान्त समाज को अत्यन्त प्रभावित किया। स्वामी जी के द्वारा दिये गये उदाहरण एवं प्रस्तुत किये गये दृष्टान्त लोगों को सिर हिलाकर स्वीकृति देने के लिए बाध्य कर देते थे। सामूहिक रूप से सभी श्रोताओं ने इस बात की माँग की कि एक अच्छा कार्यक्रम पुनः यहाँ पर आयोजित किया जाये जिसमें हम और अधिक संख्या एकत्रित करेंगे और पूज्य स्वामी जी महाराज के व्याख्यानों को अधिक से अधिक लोगों को सुनने के लिए उपलब्ध कराना चाहेंगे। यज्ञ के दौरान चारों दिनों में सभी लोगों के लिए जलपान एवं प्रातराश की सुन्दर व्यवस्था की गई थी और पूर्णाहुति के अवसर पर शानदार ब्रह्मभोज आयोजित किया गया था। यज्ञ एक समारोह के रूप में आयोजित हुआ इसके लिए मेहरा परिवार विशेष साधुवाद का पात्र है। श्री आशीष मेहरा व उनकी धर्मपत्नी श्रीमती पूजा मेहरा यज्ञ के प्रति अत्यन्त श्रद्धा रखते हैं और उन्हें यह प्रेरणा जहाँ अपने पूज्य पिता जी से मिली वहीं इसको और अधिक दृढ़ बनाने में आर्य जगत के महान संन्यासी पूज्य स्वामी सुमेधानन्द जी महाराज (चम्बा) की भूमिका विशेष रही। पूर्णाहुति के अवसर पर महर्षि दयानन्दधाम अमृतसर की ओर से श्री ओम प्रकाश आर्य जी के नेतृत्व में डॉ. नवीन आर्य, श्री अशोक, श्रीमती शिलोचना आदि ने मेहरा परिवार को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया साथ ही उन्होंने एक शॉल भेंट करके स्वामी आर्यवेश जी को भी सम्मानित किया। कार्यक्रम शांति पाठ के साथ सम्पन्न हुआ।

आर्य समाज के महान नेता, त्यागी–तपस्वी संन्यासी,
युवाओं के प्रेरणा स्रोत स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज के 83 वें जन्मदिवस के अवसर पर
13 वाँ बेटी बचाओ चतुर्वेद पारायण महायज्ञ
दिनांक : 3 मार्च, 2020 (मंगलवार) से 15 मार्च, 2020 (रविवार) तक

स्थान : स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ (आश्रम),
ग्राम–टिटौली, जिला–रोहतक (हरि.)

समय : प्रतिदिन प्रातः 8 से 11 बजे तक, सायं 3 से 6 बजे तक

ब्रह्मा : स्वामी चन्द्रवेश जी आचार्य स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ (आश्रम), ग्राम–टिटौली, जिला–रोहतक (हरि.)

अध्यक्षता : स्वामी आर्यवेश जी, प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली–2

संकल्प : इस महायज्ञ में समाज के प्रतिष्ठित प्रतिनिधि, डॉक्टर, वकील, शिक्षाविद् जन प्रतिनिधि, धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक नेता एवं हजारों स्त्री–पुरुष, छात्र एवं छात्राएँ आहुति देकर कन्या भ्रूण हत्या, नशाखोरी एवं पाखण्ड के विरुद्ध संकल्प लेंगे।

मुख्य आकर्षण
चतुर्वेद पारायण महायज्ञ
महिला दिवस पर विशेष कार्यक्रम
स्वामी इन्द्रवेश जयंती समारोह
कार्यकर्ता अभिनन्दन समारोह

विशेष : महायज्ञ में उच्चकोटि के संन्यासी, विद्वानों एवं भजनोपदेशकों द्वारा कार्यक्रम निरन्तर चलता रहेगा। यजमान बनने के इच्छुक महानुभाव अभी से अपनी सूचना देकर कृतार्थ करें। आप सभी महायज्ञ में आहुति डालकर राष्ट्र के नव–निर्माण में अपनी भूमिका निभाएं।

आयोजक
सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्
कार्यालय : स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ (आश्रम), ग्राम–टिटौली, जिला–रोहतक (हरि.)
सम्पर्क : 9416630916, 9354840454, 9466430772, 01262–286900

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।